बायोफ्यूल पर कार्यशाला | एमपीयूएटी विवि होगा तकनीकी कार्यकारी एजेंसी, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री सुरेन्द्र गोयल ने कहा

बायो-डीजल की गुणवत्ता बढ़ाने उदयपुर में बनेगा सेंटर

सिटी रिपोर्टर . उदयपुर

राज्य के ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री सुरेन्द्र गोयल ने कहा कि रतनजोत के बीज एवं बायो-डीजल की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए उदयपुर में "सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' की स्थापना होगी। इसकी तकनीकी कार्यकारी एजेंसी एमपीयूएटी विवि होगा। यहां रतनजोत की वैरायटी को लेकर अनुसंधान होगा, जिससे अच्छी गुणवत्ता का बायो-डीजल प्राप्त हो सके। गोयल गुरुवार को "स्केलिंग अप एंड मेनस्ट्रीमिंग ऑफ बायोफ्यूल इन इंडिया' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

मंत्री ने कहा कि रतनजोत से डीजल बन रहा है और कई जगह इसका वाहनों में उपयोग हो रहा है। खाड़ी देशों से आने वाले तेल में रतनजोत का तेल मिलाया जाए तो तेल आयात निर्भरता को कम किया जा सकता है। कार्यशाला में विभाग के प्रमुख शासन सचिव सुदर्शन सेठी ने कहा कि पीपीपी मॉडल के आधार पर जल्द ही केन्द्र सरकार के सहयोग से बायो-डीजल सयंत्र स्थापित किए जाएंगे। जिससे बायो-डीजल का उपयोग ज्यादा से ज्यादा वाहनों में लिया जा सके। बायोफ्यूल प्राधिकरण के निदेशक सुरेन्द्र सिंह राठौड़ ने उदयपुर संभाग में रतनजोत की प्रगति एवं आगामी कार्ययोजना के बारे में जानकारी दी।

उदयपुर । ग्रामीण विकास एवं पंचायती राजमंत्री गोयल लेकेंड में फ्यूल कार्यशाला में मंत्री बताते हुए ।

प्रदेश में प्रतिवर्ष 10 से 12 हजार टन रतनजोत का उत्पादन

एमपीयूएटी के प्रो. पीसी चपलोत ने अपने प्रजेंटेशन में कहा कि प्रदेश के 12 जिलों में प्रतिवर्ष 10 से 12 हजार टन रतनजोत का उत्पादन हो रहा है। हम इसके उत्पादन को और बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। इसमें उदयपुर संभाग के सभी 6 जिलों के अलावा सिरोही, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, बूंदी व झालावाड़ जिला हैं, जहां 12 से 15 हैक्टेयर पर इसका उत्पादन हो रहा है। इसके पौधे को लगाने के बाद तीसरे साल इसमें फल आता है। बायोफ्यूल प्राधिकरण में ओएसडी आर. के. शर्मा ने कहा कि हमने इस बार राजस संघ और राजफेड को रतनजोत के बीज संग्रहण की जिम्मेदारी दी है। झामरकोटड़ा में प्रोसेस यूनिट स्थापित हैं जहां अभी तक 88 हजार लीटर बायो-डीजल तैयार किया जा चुका है।

स्थान तय हो, कहां बेचेंगे किसान :

वैज्ञानिक डॉ. बी. एल. चौधरी ने रतनजोत के विभिन्न किस्मों पर अपना प्रजेंटेशन दिया। उन्होंने ये सुझाव दिया कि रतनजोत की बिक्री का स्थान तय होना चाहिए। इससे किसानों को विक्रय करने में आसानी रहेगी। डॉ. चौधरी ने एक प्लांट में जेनेटिकली सुधार के माध्यम से एक बीज से चार बीज तक मिलने की विधि के बारे में बताया।

तृतीय पुण्यतिथि
हमारी प्रिय
स्व. किरण निमावत